दस लाख में एक
ONE IN A MILLION

धन्यवाद भाई शेखेरियन। और मित्रों, सुप्रभात। इस महान सभा और इस आनेवाले सप्ताह एमबैसी होटल में होनेवाली सभा के होने से पहले ,इस प्रातः फिर से लॉस एन्जंल्स में होना निश्चित रूप से एक अच्छी बात है। मैं आप सभी को वहाँ पर देखने की आशा कर रहा हूँ। और हम सभी एक महान आशा के तले हैं कि अपने प्रभु यीशु से मिलें और उसे वहाँ पर देखें।उसने यह प्रतिज्ञा की है कि वह वहाँ पर होगा जहाँ दो या तीन जमा होंगे; वह वहाँ पर होगा।

2. और मैं निश्चित हूँ कि इस प्रातः जब मैं इस सभा–गृह की सीढ़ीयों से उपर आ रहा था ,मेरी मुलाकात परमेश्वर से हुयी ,जब सारे लोग बड़ी आशा के साथ नाश्ते का और बोले जाने का इन्तजार कर रहे थे। और आपके साथ इकट्ठा होना और रेडियो के श्रोताओं के साथ होना एक अच्छी बात है। यहाँ पर बहुत सारे लोग हैं कि मुझे उनमें से कुछ से बातचीत करने के लिये अगले फर्श पर नीचे जाना पड़ा।और बहुत सारे निवेदन, ह्दय से संबंधित परेशानियाँ ,और उनकी देहों के विभिन्न रोग देखे, और अब हम यहाँ पर बिमार और पिड़ितों के लिये प्रार्थना करने के लिये हैं।

3. जैसे ही मैं सीढ़ीयों से ऊपर पहुँचा .... अब मैं एक बूढ़े सज्जन की तरफ देख रहा हूँ। वह मेरे पास आये और बोले, " भाई ब्रन्हम ,वर्षों पहले ...." । वह बोले कि उनका ह्दय रोग इतनी बुरी अवस्था में पहुँच गया था कि उन्होंने ...वे यह सोच रहे थे कि उनकी मृत्यु होने जा रही है। और उनके लिये प्रार्थना हुयी, और परमेश्वर के अनुग्रह ने उन्हें चंगा किया। और इस प्रातः वह यहाँ पर अस्सी वर्ष की अवस्था में हैं, बस आनंदित हो रहे हैं। अतः यह हमें एक नई पकड़ देता है।

. 4. और अब, मैं निश्चित रुप से यहाँ पर उपस्थित लोगों से व रेडियो से सुनने वाले लोगों से प्रार्थना करने का निवेदन कर रहा हूँ।इस सभा को छोड़ने के बाद ,मैं यूरोप ,अफ्रीका में और उसके चारों ओर सभा करने जा रहा हूँ। ओर यह एक दर्शन के द्वारा जाना होगा ,अतः मैं निश्चित हूँ कि वहाँ एक बड़ी सभा होने जा रही है।
और मैं वर्षों से यह महसूस कर रहा था कि परमेश्वर यह चाह रहा है कि मैं वापस आऊँ। यह छोटी नम्र....नम्र सेवकाई जो उसने मुझे दी है मैं ऐसा नहीं सोचता हूँ कि वहाँ पर अभी उसका कार्य समाप्त हो गया है । ऐसा प्रतीत होता है कि कहीं कोई प्राण हो सकता है जिसे मैं सुसमाचार के जाल से पकडूँ ,जिसे उसने मुझे दिया है कि मैं लोगों के लिये डालूँ ,जैसे कि बिमारों के लिये प्रार्थना करने के लिये दिव्य चंगाई है । और यहाँ पर उपस्थित लोगों से और रेडियो के श्रोताओं से ,दोनो से यह निवेदन कर रहा हूँ कि आप मेरे लिये प्रार्थना करें ।

5. अब मेरे पास मूलपाठ लेकर और प्रचार करने का समय नहीं है; मैं कुछ मिनटों के बाद इस सभा–गृह में प्रचार करने की आशा कर रहा हूँ ,परन्तु यह बस आपसे कुछ समय के लिये बोलना होगा । आपसे परिचित होना होगा। और वे लोग जो बाहर की जगहों में हैं , और आप जो यहाँ पर हैं , मैं उनके लिये शीघ्र प्रार्थना करने जा रहा हूँ । और मैं निश्चित रूप से इन सभी नये मित्रों से मिलकर प्रसन्न हूँ , इनसे मैं पहले कभी नहीं मिला , उनसे बस इस प्रातः ही सम्पर्क हुआ है ।

6. दूसरी जगहों की सभाओं में हमारा बहुत अच्छा समय रहा हैं। मैं बहुत अधिक बाहर नहीं जाता हूँ ; यह ...यह बहुत ही व्यस्त समय रहा है। हम यह कोशिश करतें हैं कि हम जैफरसनविले ईन्डियाना और टयूसान एरीजोना के बीच आते जाते रहें, टयूसान ऐरीजोना में हम प्रभु के एक दर्शन के द्वारा कुछ सालों पहले आये हैं; प्रभु ने हमे वहाँ पर भेजा , हम यह नहीं जानते थे कि हम कहाँ जा रहे थे। और आप में से बहुत से जो क्लिफटन में हैं, मैंने आपको फीनीक्स सभा छोड़कर जाने से पहले उस दर्शन के विषय में बताया था । मैंने सात स्वर्गदूतों को

झुण्ड में आते हुऐ देखा था।

7. और मैं जानता हूँ , आप जो कि रेडियो के श्रोतागण हैं , शायद आप में से बहुत से फुल गास्पल से सम्बन्ध नहीं रखते, और यह बात आपको कुछ भेदपूर्ण लगेगी। जो कि मुझे भी लगेगी ,परन्तु एक बात है ....कोई भी वह व्यक्ति जो किसी बात को समझा सकता है ,आप उस बात को विश्वास से और अधिक ग्रहण नहीं कर सकते हैं। वो बातें जिन्हें हम समझा नहीं सकते हैं ,वही बातें हमे विश्वास के द्वारा ग्रहण करनी चाहिये। हम परमेश्वर को समझा नहीं सकते हैं। कोई भी व्यक्ति परमेश्वर को समझा नहीं सकता है। वह प्रधान है,वह विशाल व महान है। हम बस –हम बस उस बात को ग्रहण करते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि वह है। और फिर उसे ग्रहण करने के द्वारा जब हम विश्वास करतें हैं ,वह पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के द्वारा हमारे पास जवाब भेजता है ।

8. जिसके विषय में कुछ छणों के लिये ,मैं आपसे ," परमेश्वर का तरीका या आराधना का स्थान " नामक विषय के ऊपर बोलने जा रहा हूँ । और एक ही स्थान है जहाँ आप उसकी आराधना कर सकतें हैं, एक ही जगह है जहाँ वह आपसे मिलेगा ,एक है....एक कलीसिया है, एक स्थान है, एक लोग हैं और वही सब जिससे परमेश्वर मुलाकात करता है। मैं आशा करता हूँ कि परमेश्वर यहाँ पर आप सभी के हृदयों को इस संदेश के द्वारा आशीषित करेगा।

9. अब टयूसान में आना एक विचित्र बात थी , वे दर्शन जिन्हें परमेश्वर के नाम में बोला गया, जहाँ तक मैं याद कर सकता हूँ ,या किसी और से पूछें कि अगर वे कभी ऐसा समय याद कर सकतें हैं कि कभी परमेश्वर ने सच्चाई के अलावा कुछ और कहा हो। हमेशा वैसा ही होता है जैसा वह कहता है कि होगा।

10. वचन के अनुसार उससे यह अपेक्षा की जा रही है कि वह हमें

अंतिम दिनों में इस तरह की सेवकाई की तरफ वापस ले जायेगा। यह बात पवित्र आत्मा के बपतिस्मे और अन्य–अन्य भाषा के बोले जाने और दिव्य चंगाई और इन्हीं बातों के बाद होगी । यह पिन्तेकोस्तल संदेश के ऊपर चोटी का पत्थर उतरना ही है जिसके विषय में हम आज बोल रहें हैं। स्वयं मसीह की यह सेवकाई उसके लोगों में रुप धारण करेगी, ठीक उन्हीं बातों के साथ जो कि उसने तब करीं थीं जब वह पृथ्वी पर था ; अपनी देह में , दुल्हन में ,जो कि उसका भाग है , पति और पत्नी या राजा और रानी , ब्याह के भोज से पहले ठीक उन्हीं कामों को कर रहे हैं।

11. इस सप्ताह ,एमबैसी होटल पर ,यहाँ बाहर हमारे अभियान में मैं इस विषय पर कुछ बोलना चाहुँगा , और आप मेरे इस बात को नम्र तरीके से करने से परिचित हो जायें । जिस समय और घंड़ी में हम रह रहे हैं , अगर एक व्यक्ति यह नहीं जानता है कि किस रास्ते पर जाना है , क्या करना है , या किधर मुड़ना है , आप नहीं चल रहे हैं–आप विश्वास में और अधिक नहीं चल रहे हैं ; आप अंदाजा लगा रहे हैं , आप अनुमान लगा रहे हैं । और अनुमान लगाना (presume) बिना किसी "राजकीय अधिकार के आगे बढ़ना होता है ।" अतः यदि हमारे पास इस बात को जानने का वास्तविक राजकीय अधिकार नहीं है कि परमेश्वर ने इस घड़ी क्या घटित होने के लिये कहा है , तो हम इस घड़ी का सामना कैसे करने जा रहे हैं ? और हमें इस बात का सामना उसके वचन में विश्वास के द्वारा करना है , उन बातों को जानते हुये ;जिनको कि अभी घटित होना है; और राष्ट्रों की स्थिति , लोगों की स्थिति , कलीसिया की स्थिति और वगैराह –वगैराह ।

12. हमें उन बातों को जानना है और फिर यह भी जानना है कि कैसे जाकर उनका सामना करना है । यदि आप यह नहीं जानते हैं कि इसे कैसे करना है , आप बस– बस जैसे कि हम कहा करते थे , एक तरह से आप अव्यवस्थित तरीके से चल रहें हैं , बस कूद पड़ते हैं; यह आशा कर रहें हैं कि ऐसा होगा , इस बात की व उस बात की आशा

कर रहे हैं और यह कहते हैं , "क्या ऐसा होगा ?" परन्तु परमेश्वर हमसे नहीं चाहता है कि हम ऐसा करें । वह हमसे चाहता है कि हम यह जानें कि उसने इस दिन के विषय में क्या कहा है और फिर जाकर विश्वास से उसका सामना करें ; क्योंकि उसने कहा है कि ऐसा ही होगा । तब हम – हम जानते हैं कि आप सच्चाई हैं , क्योंकि आपके पास किसी और व्यक्ति का वचन नहीं है ; आपके पास उसका वचन है कि हमें क्या करना चाहिये । और हम आशा कर रहे हैं कि हमारा स्वर्गीय पिता हमे यह इस सप्ताह प्रदान करेगा ।

13. अब मैं क्षमा चाहता हूँ क्योंकि जो बात मैंने टयूसान में आने के विषय में कह रहा था , उसको बीच में मैंने रोक दिया था । और स्वयं मैंने यह सोचा कि यह मरे जीवन का अन्त है । मैंने सोचा कि कोई भी व्यक्ति उस स्थिति के सदमे को सहन नहीं कर सकता था जो कि दर्शन में सुबह दस बजे हुआ , कि कोई भी उसके बाद कभी जीवित रह सकता है । क्यों , मैं टयूसान आया ताकि अपनी पत्नी का अपने पुत्र के साथ रहने का प्रबन्ध कर सकूँ क्योंकि मैंने सोचा कि यह मेरा अन्त था। और मैंने फीनिक्स की सभाओं में इसके घटित होने से पहले ही आपको यह बता दिया था कि यह ठीक कैसे घटित होगा ।

14. अच्छा उसके कुछ महीने बाद एक प्रातः मैं सबीनो घाटी में था, जो कि टयूसान के पूर्व में है । मैं वहाँ पर प्रार्थना करने गया था । और जब मैं प्रार्थना कर रहा था , मैंने अपने हाथ हवा में यह कहते हुये उठाये , " पिता , मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप कैसे भी हो मेरी सहायता करेंगे ; जिस घड़ी का मैं सामना कर रहा हूँ , उसके लिये आप मुझे सामर्थ प्रदान करें । और यदि मेरा कार्य पृथ्वी पर समाप्त हो गया है, तब फिर मुझे आपके पास आना चाहिये । और ऐसा नहीं है कि मुझे आपके पास आने में दुःख हो रहा है , परन्तु मैं जानता हूँ कि आप मेरे परिवार का ध्यान रखेंगे । और मैं– मैं बस इस घड़ी के लिये सामर्थ माँगता हूँ ।" और कोई चीज मेरे हाथ से टकराई ।

15. अब रेडियो के श्राताओं , जो मैंने कहा है वह अजीब सा लगेगा, परन्तु यह सच्चाई है । और परमेश्वर मेरा न्यायी है ।

16. मैंने अपने हाथ में देखा , और वहाँ पर एक तलवार थी , जिसके हत्थे वाले भाग पर एक आवरण था । और उसका हत्था खुद मोती का बना हुआ था , ऐसा प्रतीत होता था कि उसके हत्थे वाले भाग के ऊपर साने के जैसी एक रोक (guard) थी । और उसकी धार ऐसी लगती थी मानो कि एक तरह से वह चमक रही हो , ओह , क्रोम (एक विशिष्ट धातु) के जैसा या कुछ इस प्रकार का जो कि सूर्य में चमक रहा हो।

17. अब वहाँ ऊपर पहाड़ी पर सुबह लगभग दस या ग्याराह बजे का समय रहा होगा । आप कल्पना कर सकतें हैं कि एक व्यक्ति को, जो कि यह महसूस कर रहा है कि वह दिमागी तौर पर ठीक–ठाक है वहाँ पर तलवार के साथ खड़ा होना कैसा लगेगा जो कि न जाने कहाँ से आयी , और जहाँ पर मीलों और मीलों दूर तक कोई लोग न हों । मैने उसको महसूस किया , उसको लिया और तलवार को आगे और पीछे चलाया, और क्यों , वह तो एक तलवार थी ।

18. और मैंने चारों ओर देखा । मैंने कहा , " अच्छा , अब यह कैसे हो सकता है ? यहाँ पर मैं ठीक इस जगह खड़ा हूँ , और मीलों और मीलों दूर तक कोई नहीं है ; और यह कहाँ से आयी ?" और मैंने कहा, "अच्छा , मैं–मैं यह कल्पना कर सकता हूँ ; हो सकता है कि प्रभु मुझे यह बता रहा है कि यह मेरा अन्त समय है । "
और एक आवाज ने बोला और कहा , " यह परमेश्वर की तलवार है।"

19. और मैंने सोचा , " अच्छा एक तलवार , फिर तो यह एक तरह से एक शूरवीर के लिये एक राजा की तलवार होना चाहिये ।" आप जानते हैं कि यह इंगलैंड व दूसरी जगहों में कैसे हुआ करती थी। मैंने सोचा , " यह उसी के लिये है , एक शूरवीर के लिये ।" और मैंने सोचा, " अच्छा , हो सकता है कि मुझे लोगों पर हाथ रखने हों या .... आप

जानते हैं कि मानवीय दिमाग पूरी तरह से उलझन में पड़ सकता है । आप नहीं जानते हैं । हमारे मस्तिष्क सीमित हैं । अतः जब मैं , वह— फिर वह मेरे हाथ से चली गयी और मुझे नहीं पता कि वह कहाँ गयी, बस गायब हो गयी । क्यों , यदि एक व्यक्ति आत्मिक बातों के बारे में थोड़ा बहुत नहीं समझता है , आप— आप उस तरह से पागल हो जायेंगे। आप वहाँ पर खड़े हुये होंगे , यह आश्चर्य कर रहे होंगे कि क्या हुआ ।

20. और उसने कहा , " यह दर्शन तुम्हारे अन्त समय के विषय में नहीं है । यह तुम्हारी सेवकाई के विषय में है । यह तलवार वचन है। सात मोंहरें खोली जायेंगी , वे भेद .....

21. और फिर उसके दो सप्ताह बाद , या दो महीने बाद , उसके बाद मैं अपने दोस्तों के झुण्ड के साथ ऊपर पहाड़ पर था , जबकि यह घटित हुआ । सात स्वर्गदूत स्वर्ग से तेजी से आये । यह बात मैंने इतनी सफाई से देखी जितनी सफाई से आप मुझे यहाँ खड़े हुये दिखाई दे रहे हैं । पहाड़ों पर से चट्टानें नीचे लुढ़क गयीं और लोग जो कि वहाँ खड़े हुये थे , चिल्ला रहे थे और भाग रहे थे , आप जानतें हैं , धूल हर तरफ उ्ड़ रही थी । और जब यह हुआ , उसने कहा , " अपने घर वापस जाओ । अब ऐसा होगा कि हर एक स्वर्गदूत सातों मोहरों में कि एक—एक मोहर होगा ।"

22. यह बात टेप पर है । और वह पुस्तक बहुत जल्दी आयेगी, अब एक तरह से उसको व्याकरण के अनुसार किया जा रहा है । जैसे कि आपको पता है कि मेरा व्याकरण बहुत अच्छा नहीं है , और लोग नहीं .... आप को उस तरह के लोग होना है जो मुझसे प्रेम करते हैं , और इस बात को जानते हैं कि मेरे व्याकरण को कैसे समझना है । परन्तु कोई धम्रशास्त्र का ज्ञाता उसे मरे लिये व्याकरण के अनुसार कर रहा है; और उसमे से वो सब निकाल रहा है .... अच्छा , हो सकता है कि मैंने वहाँ पर गलत शब्द कह दिया हो । मैं इसे जानता तक नहीं हूँ।

मैंने किसी को अभी हँसते हुये सुना है , अतः मेरा अनुमान है कि 'व्याकरण के अनुसार करना ' शायद ठीक शब्द नहीं था । परन्तु डच व्यक्ति की तरह आप इस बात पर ध्यान दें कि मेरे कहने का क्या मतलब है न कि जो वास्तव में मैं कहता हूँ ।

23. और मुझे बताया गया है कि कार्यक्रम को समाप्त होने में अब बस तीन मिनट बचें हैं ।

24. अब आप प्रिय लोग जो कि बाहर रेडियो से सुन रहें हैं , और आप जो कि सभा में बिमार और आवश्यकता में हैं ; क्या आप बस अपने हाथ एक दूसरे पर रखेंगे जबकि हम बिमारों के लिये प्रार्थना करने जा रहे हैं । अब यीशु ने अपनी कलीसिया को दिये गये अंतिम कार्यभार में कहा था , " विश्वासीयों में यह चिन्ह पाये जायेंगे ।" "वे " जो विश्वास करते हैं । " यदि वे बिमारों पर हाथ रखेंगे तो बिमार चंगे हो जायेंगे ।"

25. प्रिय स्वर्गीय पिता , हम आज बच्चों की तरह हैं , हम उस बात का पालन कर रहें हैं जो आपने कही है । हम इन निवेदनो के ऊपर जो टेलीफोन से आये हैं , हाथ रखते हैं । आप उनको वहाँ बाहर देखते हैं कि उनको किस बात की आवश्यकता है और उनकी क्या तकलीफें हैं । आप यहाँ उनको देखते हैं जो कि आवश्यकता व कष्ट में हैं । प्रिय परमेश्वर , हम उनको आपको सौंपते हैं , आपके वचन में इस विश्वास के साथ जैसा कि आपने कहा था , " विश्वासियों में यह चिन्ह पाये जायेंगे । यदि वे बिमारों पर हाथ रखेंगे तो वे चंगे हो जायेंगे।" परमेश्वर , इसे प्रभु यीशु मसीह के नाम में प्रदान कीजिये । आमीन। (टेप में रिक्त स्थान – सम्पा.)
{ भाई ब्रनहम पहले रेडियो प्रसारण को समाप्त करते हैं }

26. भाई शेखेरियन , धन्यवाद । प्रसारण पर वापस आना निश्चय

ही एक सौभाग्य है , रेडियो से सुनने वाले मित्रों से बोलना और जो यहाँ पर उपस्थित हैं , उनसे बातचीत करना निश्चय ही एक महान सौभाग्य है ।

27. और हम निश्चय ही यह निमंत्रण आपकी तरफ बड़ा रहे हैं कि आप कल दोपहर प्रार्थना करवाने के लिये एमबैसी होटल में आयें । और इतना ही नहीं पर अपने साथ उन लोंगों को लायें जो पापी हैं और वे जो पीछे हट चुके हैं । यदि हम बस बिमारों के लिये प्रार्थना करते हैं, और हम परमेश्वर को निरन्तर आश्चर्यक्रम करते हुये देखते हैं , परन्तु यह तो ऐसी बात है जो दूसरे स्थान पर आती है । सबसे जरुरी बात तो परमेश्वर की आत्मा से भरकर उद्धार पाना है , जिसके विषय में मैं यहाँ कुछ क्षणों के लिये बोलने जा रहा हूँ , और योग्यता के विषय में भी कि कैसे हमे पवित्र आत्मा से भर जाना है ।

28. और दिव्य चंगाई अक्सर लोगों के ध्यान को आकर्षित करती है, और उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति में लेकर आती है । जब परमेश्वर किसी बात को करता है जिसे वे जानते हैं कि असाधारण ..... अच्छा, यह समझा नहीं जाता । हम यान्त्रिक तरीके से यह नहीं दिखा सकते हैं कि यह कैसे करा जाता है । परमेश्वर उसे अपने महान तरीके से करता है । तब वह लोगों के ध्यान को आकर्षित करता है , कि वे इस बात को जान जाते हैं कि कही सामर्थ है , कि वह कुछ कर सकता है जो कि मानवीय समझ से परे है , और वह बात उन्हें परमेश्वर के मेमने की तरफ देखने के लिये प्रेरित करती है । और हमेशा दिव्य चंगाई ; मुझे बताया गया है और मै स्वयं विश्वास करता हूँ कि हमारे प्रभु की सेवकाई का लगभग साठ या शायद सत्तर प्रतिशत भाग दिव्य चंगाई थी । और उसने लोगों को आकर्षित करने के लिये किया था । जब वे वहाँ पर थे , उसने कहा था , " जब तक तुम इस बात पर विश्वास न कर लो कि मैं ही वो हूँ , तुम अपने पाप मे नाश हो जाओगे ।"

29. अब दिव्य चंगाई एक बड़ा आकर्षित करने का माध्यम है ताकी लोग प्रभु यीशु की तरफ देख सकें । और डाक्टर एफ. एफ . बौसवर्थ, जो कि आप में से बहुतों के मित्र थे , और आप उन्हें जानते थे , जब मै एक युवा सेवक था तो उनकी सेवकाई मेरे लिये बहुत मायने रखती थी । मैंने अपनी सेवकाई शुरु की और मुझे भाई बौसवर्थ मिल गये । वह कहा करते थे , " दिव्य चंगाई " यह तो एक अपक्व सा कथन है , उन्होंने कहा , " दिव्य चंगाई तो मछली पकड़ने के काँटे में लगा वह प्रलोभन है " कहा , " आप मछली को काँटा कभी नहीं दिखाते हैं, आप उसे उसमे लगा हुआ लुभावना भोजन दिखातें हैं और फिर वह उस खाने की तरफ आती है और काँटे में फँस जाती है ।" अतः यही हम करने की कोशिश करते हैं । वही हमारी .... हम.... हमारा उद्देश्य लोगों को प्रभु यीशु मसीह तक पहुँचाना है । और वह कल आज और युगानयुग एक सा है । अतः यदि वह गुजरे दिनों में चंगा करने वाला था , वह आज भी चंगा करने वाला है ।

30. इससे पहले कि मैं रेडियो से सुननेवाले बिमार लोगों के लिये प्रार्थना करुँ , एक व्यक्तिगत गवाही है । यह कुछ दिन पहले हुआ कि मैं पहाड़ों पर बैठा हुआ था जब यह महान बात पन्द्रह या बीस भाईयों के सामने घटित हुयी , जहाँ परमेश्वर का दूत नीचे आया और एक प्रकाश पुच्छल तारे की तरह उड़ता हुआ , पहाड़ियों से होता हुआ आया; और चट्टानें दो सौ फिट तक या उससे ज्यादा दूर तक जमीन के उस पार पेड़ों के उपरी हिस्सों को काटते हुये उड़ गयीं । और मैं ठीक उसके नीचे खड़ा था । और इससे पहले कि यह घटित हो , मैंने कुछ छणों पहले ही बता दिया था कि वह वहाँ पर होगा और क्या घटित होगा , स्पष्ट बात तो यह है कि यह एक दिन पहले ही बताया जा चुका था। और सब लोग ट्रकों के नीचे भाग रहे थे और वे उससे दूर भागने की कोशिश कर रहे थे । वे नहीं जानते थे कि क्या घटित हुआ है । और उसने बोला कि उसके ठीक बाद क्या घटित होगा ।

31. उस निश्चित चट्टान पर बैठे हुये , ठीक जहाँ पर वह प्रगट हुआ

था , मेरे साथ में एक मित्र था जो कि हमारे साथ में था , जो कि मिनेसोटा से आया था । उसके लोग यहाँ इस प्रातः उपस्थित हैं और मैं निश्चित नहीं हूँ परन्तु वह इस होटल की किसी और मंजिल पर होगा। वह डोनोवन वीरट्स था , जो कि एक अच्छा युवा लड़का है , वह एक लूथरन था जिसने अपना जीवन मसीह को दे दिया और आत्मा से भर गया था । बहुत ही नम्र जर्मन लड़का , लगभग तीस साल का और उसके परिवार में दो या तीन छोटे बच्चे थे । वह ट्यूसान में आया और मेरे पड़ोस में मेरे साथ रहने लगा , जहाँ तीन या चार सौ लोग वहाँ पड़ोस में रहने के लिये आये थे । अतः उसने .....

32. और मैं प्रसन्न हूँ कि मुझे ऐसे पड़ोसी मिले । वे मेरे पीछे–पीछे पश्चिमी अफ्रीका में और चारों तरफ सब जगह गये ताकि वे मेरे निकट रह सकें और देख सकें .... मेरे साथ रह सकें और परमेश्वर के आनंदों का अनुभव कर सकें ।
वह इतना अधिक नम्र व्यक्ति था कि मैंने उसकी तरफ इतना ध्यान नहीं दिया ।

33. क्योंकि लोग जिन्हें मैं जानता हूँ , और जो मेरे साथ रहते हैं, वे मेरे भाई और बहन की तरह हैं । मैं उन्हें देखता हूँ और यदि यह महसूस करता हूँ कि वे पंक्ति से बाहर जा रहे हैं , तो उन्हें बाहर एक तरफ ले जाता हूँ और उनसे बातचीत करता हूँ क्योंकि मैं उनसे प्रेम करता हूँ । हम महिमा में एक साथ रहना चाहते हैं । और कभी–कभी सभाओं में अगर आप सोचते हैं कि मैंने आपसे कठोरता से बोला है । ऐसा नहीं है । ऐसा नहीं है कि मै आपसे प्रेम नहीं करता हूँ , परन्तु यह मेरे हृदय से आता है । क्योंकि मैं–मैं– ... ऐसा तो बस एक ही तरीके से होना चाहिये । परमेश्वर की सेवा करने का केवल एक ही तरीका है। और वह यह है – और हमें उसी के तरीके में रहना है , इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हमारे विचार क्या कहते हैं । उसका तरीका!

34. और मैंने डोनोवन की तरफ ध्यान दिया , उसके दायें कान के

छोर पर , उस कान के शायद तीन गुना आकार में कुछ सूजा सा था, और वह लाल दिखता था । अच्छा , अब मैं सोच रहा था कि वह शायद रेगिस्तान में कुछ दिनों तक था जहाँ हम लोग थे , कि शायद उसके कान पर नागफनी (एक रेगिस्तानी कँटीला पौधा) लग गया हो । परन्तु जब मैने उसका हाथ पकड़ा , तो मैंने पता लगाया कि वह कैन्सर था। अतः मैने डोनोवन से कहा ," डोनोवन , क्या तुम्हें ..... यह तुम्हारे कान पर कितने दिनों से है ? "
बस एक तरह से यह बात उसके मुँह से कहलवाने के लिये , जैसे कि मैं इस बात को जानता नहीं हूँ ।
मैंने कहा , " डोनोवन , यह वहाँ पर कितने समय से है ।"
उसने कहा , " भाई ब्रन्हम , करीब छः महीने से । "
मैंने कहा , " तुमने मुझे बताया क्यों नहीं ? "

35. उसने कहा , " ओह , मैं आप को अपने कार्य में बहुत व्यस्त देख रहा था , " कहा , " मैंने आपको नहीं बताया । " कहा , " मैने बस सोचा कि शायद कभी प्रभु आपको बता देगा । "
अतः मैने कहा , " क्या तुम्हें अहसास है कि यह क्या है ? "
उसने कहा , " मुझे इसका अच्छा आभास है । "
मैंने कहा , " यह ठीक है । "

36. और दूसरी सुबह । उससे और अधिक कुछ नहीं , उस लड़के को उसके हाथ से पकड़ा ; दूसरी सुबह उसके कान पर एक निशान तक नहीं था । वह पूरी तरह से जा चुका था ।

37. अतः बहुत सी बार हम जोर लगाते हैं , यह और वह करने की कोशिश करते हैं । देखिये , यह कहा गया है , " ये चिन्ह विश्वासीयों में पाये जायेंगे ।" यह नहीं कहा ," यदि वे बिमारों के लिये प्रार्थना करेंगे।" " यदि वे बिमारों पर हाथ रखेंगे , तो वे चंगे हो जायेंगे ।" हमे स्वयं विश्वास होना चाहिये कि हम क्या कर रहे हैं । ठीक है ।

38. अतः डोनोवन शायद यहाँ है । आप उससे मिलेंगे । वह वहाँ पर होगा । वह किसी और मंजिल पर इस प्रातः यहाँ होगा । आप उससे मुलाकात करेंगे और वह गवाही जान जायेगा ।

39. और अधिक मैं क्या कह सकता हूँ ? मैं विश्वास करता हूँ कि लूका या यूहन्ना में से किसी एक में कहा गया है कि संसार अपने में नहीं समा सकता है .... अंतिम दिनों में जो उसने लोगों के मध्य में किया है, यदि वो पुस्तकों में लिखा जाये तो इस संसार में समा नहीं पायेंगी .; कैसे बिमार चंगे हुये हैं , हजारों की संख्या में शराबियों का छुटकारा हुआ है , और विभिन्न प्रकार की बिमारियों से और परेशनियों से आजादी मिली है ।

40. अब आप जो कि रेडियो के द्वारा सुन रहें हैं , और वे जो कि यहाँ पर हैं , मैं अब यहाँ बहुत सारी निवेदनों को जो कि फोन से इस प्रातः आये हैं , थामे हुआ हूँ , जब से हम यहाँ पर आये हैं , तब से फोन लगातार बज रहा है । अतः आइये , हर एक जन अब प्रार्थना में जाये .... जहाँ कहीं भी आप हों , एक दूसरे पर हाथ रखें ; यदि आप विश्वासी हैं । यदि नहीं , किसी चीज पर या बाईबिल पर हाथ रखें जबकि हम यहाँ और वहाँ प्रार्थना करते हैं ।

41. प्रिय स्वर्गीय पिता , एक छोटी सी गवाही जो कि डोनोवन वीरट्स की थी , उन हजारों गवाहीयों में से एक ; प्रभु , आप ने अपनी दया से .... मेरी प्रार्थना है कि आप यहाँ पर और जो कि रेडियो के द्वारा सुन रहे हैं , दोनो के हृदयों में नीचे दृष्टि डालें । और होने पाये कि वे और हर एक चंगा हो जाये । हाने पाये कि वो दुष्ट उनको छोड़कर चला जाये , और वे अपनी तकलीफों से छुटकारा पायें । पिता इसे प्रदान कीजिये । आपके पुत्र यीशु मसीह के नाम से माँगते हैं , आमीन। परमेश्वर आपका धन्यवाद हो ।

(टेप में रिक्त स्थान.– सम्पा...)

{ भाई ब्रन्हम दूसरे रेडियो प्रसारण को समाप्त करते हैं }

42. अच्छा , इस प्रातः यहाँ ऊपर यह मेरे लिये तीन बार हो गया है । ओह मेरे परमेश्वर ! और आप जानते हैं कि यह अभी बताया गया है कि हमें यह जगह बारह या चौदह मिनटों में या कुछ इतने ही मिनटों में खाली करनी है । और प्रबंध ने जो कि वहाँ किसी और मंजिल पर है , कहा है कि वे भोजन को परोस नहीं सकते हैं । हमारा भोजन थोड़ा लम्बा हो गया है । आप जानते हैं कि हम बहुत सारे दौर से गुजर चुके हैं । अतः हम बहुत प्रसन्न हैं कि हमारी इस प्रातः इन अच्छे लोगों के झुण्ड के साथ , जैसा कि मै इसको कहुँगा, महान आत्मिक पेट भर कर खाने की जुबली हुयी है ।

43. मैं इस बात का उल्लेख करना चाहता हूँ कि हम .... कल दोपहर एमबैसी में सभायें होंगी । अब हम वहाँ बिमारों के लिये प्रार्थना करेंगे और परमेश्वर से यह अपेक्षा करेंगे कि वह हमसे मुलाकात करे । अब मैं इस सभा को सफल बनाने के लिये (वो सब कुछ जो हम कर सकते हैं) अपना भाग अर्थात अपनी सेवकाई को इसमे लगाने आया हूँ , यह इसलिये सफल नहीं है कि यह हमारी सभायें हैं परन्तु लोगों की यीशु मसीह को पाने की सफलता । यही सफलता है । कैसी भी सभायें , इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम परमेश्वर की कितनी स्तुति करते हैं , कितने महान कार्य हम उसे करते हुये देखते हैं , कितनी बार वह हमसे आत्मा में बोलता है , जब तक कि कुछ हासिल नहीं कर लिया जाता , कुछ प्राण राज्य में नहीं लाये जाते हैं !

44. और भाई शेखेरियन ने अभी–अभी एक वास्तविक कथन कहा है कि उनके इन दिनों के बारे में जिसमें हम– हम रह रहे हैं , क्या विचार हैं । मैं सच्चाई से अपने पूरे हृदय के साथ विश्वास करता हूँ कि हम बस समय के अन्त पर रह रहे हैं , शाम की परछाईयों में रह रहे हैं। सूर्य बहुत अधिक आगे बढ़ चुका है । और जब हम बातों को ,जिस तरह से वे आज हैं , घटित होते हुये देखते हैं ; क्यों , यह बताना बहुत कठिन है कि अगली पीढ़ी क्या लेकर आयेगी । कुछ दिन पहले...।

45. आइये मैं आपको कुछ अन्दर की बात बताऊँ । उन्होंने एरीजोना में , जहाँ मैं रहता हूँ , स्कूलों का एक विश्लेषण किया । उन्होंने बच्चों की एक दिमागी परीक्षा ली , बच्चे इस बात से परिचित नहीं थे । और अनुमान लगाईये कि क्या हुआ ? हाई–स्कूल और–और व्याकरण स्कूलों को मिलाकर अस्सी प्रतिशत बच्चों में मानसिक आभाव पाया जाता था । सत्तर प्रतिशत उनमे से टेलीवीजन के देखने वाले थे। उन बुराईयों को देखिये , वे हमें कैसे धोखा दे रहीं हैं और हम नहीं .... आप आश्चर्य करते हैं कि यह बातें क्यों होती हैं । आप परमेश्वर की आवाज को उसके विरूद्ध चिल्लाते हुये सुन सकते हैं , और फिर भी हम–हम अपने आप को उसमे लिपटा हुआ पाते हैं ।

46. आईये मैं आपको एक एसी बात बताऊँ जिससे आपको धक्का लगेगा । देखिये , " वे सभी जो मुझे 'परमेश्वर , परमेश्वर' बोलते हैं अन्दर प्रवेश न करेंगे ; परन्तु वही जो मेरे पिता की इच्छा पर चलता है।" उसकी इच्छा उसका वचन है । हम बहुत धार्मिक हो सकते हैं , हमारा इन सभाओं में चिल्लाने और कूदने में बहुत अच्छा समय व्यतीत हो सकता है , जो कि हम – मैं–मैं आलोचक नहीं होना चाहता हूँ । परन्तु परमेश्वर के प्रति मेरा एक–एक कर्तव्य है , और वह कर्तव्य यह है कि मैं सत्यनिष्ठ बना रहूँ और वही कहूँ जो वह मुझे वह कहने को कहता है । और मैं–मैं कैलीफौर्निया की इस सभा के प्रति निश्चित रूप से आभारी हूँ कि उन्होंने मेरी इस धारणा में साथ दिया है । यदि मैं अपनी धारणा को न बोलूँ , तो मैं एक पाखंडी होंऊँगा तब मैं आपके प्रति ईमानदार नहीं रहुँगा , और यदि मैं आपके प्रति ईमानदार नहीं हूँ ,तो मैं परमेश्वर के साथ ईमानदार कैसे रहुँगा , क्योंकि मैं तो आपको देखता हूँ और आपसे बातचीत करता हूँ । क्योंकि हमे परमेश्वर के प्रति भी रहना है , परन्तु हमे एक दूसरे के प्रति वास्तविक ईमानदार व सत्यनिष्ठ बने रहना है । हम निश्चित रूप से एक भयंकर युग मे रह रहे हैं । और क्या आप रूक ....

47. बस मुझे एक छोटा सा विश्लेशण देने दें । " वो हर एक जो

मुझे 'परमेश्वर ,परमेश्वर ' कहता है , अन्दर प्रवेश न करेगा ; परन्तु वही जो मेरे पिता की इच्छा को पूरा करता है ।" यीशु ने , जब वह इस पृथ्वी पर था , कहा , " मनुष्य केवल रोटी से ही नहीं परन्तु हर एक वचन से जीवित रहेगा ।" हर एक वचन ! ऐसा नहीं कि बस एक यहाँ और एक वहाँ , एक वचन के द्वारा नहीं परन्तु हर एक वचन के द्वारा ।

48. परमेश्वर के द्वारा दिया गया... एक ही वचन का अविश्वास किया गया था ,जिसने मृत्यु को , दुःख को उत्पन्न किया , और हर बिमारी और हृदय का टूटना , यह सब परमेश्वर के वचन में , परमेश्वर के एक वचन में चूक जाने से हुआ । एक वचन " निश्चय ही (surely) " में चूक जाने से , अविश्वास करने से यदि वह मानव जाति को मृत्यु में लेकर गया । परन्तु उसने कहा था कि यह घटित होगा । शैतान ने कहा ," निश्चय ही ऐसा नहीं होगा । " परन्तु ऐसा ही हुआ ।

49. अतः हमे परमेश्वर का हर एक वचन रखना है । और यदि मानव और सारे कष्ट और वे सारी बातें जो कि मानव जाति के साथ हुयीं ,एक वचन का अविश्वास करने से या एक वचन का गलत अर्थ निकालने से हुयीं तो हम भी यदि एक वचन में चूक जातें हैं तो कैसे बच पायेंगे , यदि इस बात के लिये इतना बड़ा दाम चुकाना पड़ा , यहाँ तक की उसके पुत्र को अपना जीवन देना पड़ा ?

..... बुलाये हुये तो बहुत हैं ,..... चुने हुये थोड़े से हैं ।

..... बुलाये हुये तो बहुत हैं ,..... चुने हुये थोड़े से हैं ।

50. मैं इससे मूल पाठ नहीं ले रहा हूँ क्योंकि हमारे पास समय नहीं है परन्तु आप के पास बस कुछ छोड़ना चाहता हूँ । आईये हम इसके विषय में सोचें .....

51. मैं एक दिन भाई शेखेरियन के साथ गया , जहाँ वे गाय बैल को मिश्रित (hybreeding) कर रहे थे । भाई शेखेरियन जहाँ मुझे ले गये वहाँ मैने एक प्रयोगशाला में देखा । और उन्होंने बस थोड़े से बैल

के शुक्राणुओं को लिया , जैसे कि छोटे से उपकरण अर्थात एक नली को लिया और उससे कुछ शुक्राणु उठाये ; और उसे एक शीशे के नीचे रख दिया जहाँ उसका आकार सौ गुना से भी अधिक हो गया । और उस शुक्राणु में छोटे जीवाणु कूद रहे थे । जैसे कि हम जानते हैं कि शुक्राणु नर से आते हैं और अंडे मादा से । और मैने वहाँ रसायज्ञ से पूछा , " ऐसा क्या है जिससे यह जीवाणु इस तरह कूद रहे रहे हैं ?" उसने कहा , " वहाँ पर छोटे–छोटे गाय और बैल हैं ।" समझे ? और मैंने कहा , " उस छोटी सी एक बूँद में ?"

52. मैंने कहा , " तो फिर शायद उस पूरे शुक्राणुओं में दस लाख होंगे ? "
उसने कहा , " ओह हाँ । " समझे ? और मैंने और करीब से देखा ।

53. अब जब यह महान बात होती है , तो एक अंडा उन दस लाख शुक्राणुओं में से एक का इन्तजार कर रहा होता है । और कोई भी यह नहीं बता सकता है कि वह कौन सा जीवाणु होगा या कौन सा अंडा होगा । यदि आप स्वाभाविक जन्म को देखें , यह भेद से भी बढ़कर है यह कुवाँरे रूप से जन्म लेने के भेद से भी बढ़कर है । क्योंकि शुक्राणुओं में वहाँ जीवित रहने के लिये एक पहले से ठहराया गया होता है, और बाकी सब की मृत्यु हो जाती है । और ऐसा नहीं है कि पहले वाला मुलाकात करता है ;यह तो पहले वाला होता है जो कि अंडे के साथ मिलता है । हो सकता है कि वह अंडा शुक्राणुओं के पीछे वाले भाग से निकला हो , या शुक्राणुओं के बीच वाले भाग से निकला हो , जीवाणु भी ऐसा ही कर सकते हैं , अंडे भी । जीवाणु अंडे मे रेंग कर जाते हैं और एक छोटी सी पूँछ बाहर निकलती है , और वहाँ रीण की हड्डी बनना शुरू हो जाती है । वहाँ पर दस लाख के ढेर मे केवल एक ही होता है जो वहाँ तक पहुँचता है , केवल एक , और मनुष्य के लिये इस बात को एक महान शक्ति निर्धारित करती है । फिर भी आप , हर एक जन एक सामान लगते हैं , हर एक जीवाणु एक सामान लगते हैं। वही बात पशुओं के साथ में होती है । वही बात मनुष्यों के साथ में भी

होती है । यह निर्धारित किया जाता है कि वह एक लड़का होगा की एक लड़की , लाल सिर वाला कि काले सिर का या कुछ और । यह परमेश्वर के द्वारा निर्धारित किया जाता है । वे सभी प्राकृतिक तौर पर तो एक सामान लगते हैं , परन्तु वहाँ एक ही होता है जिसको जीवन के लिये ठहराया जाता है ; दस लाख में एक , फिर भी वे सब एक सामान होते हैं ।

54. जब इस्त्राएल ने मिस्त्र छोड़ा , तो करीब बीस लाख लोगों ने एक साथ मिस्त्र छोड़ा । हर एक ने भविष्यद्वक्ता के संदेश को सुना । हर एक ने आग का खम्बा देखा । हर एक का बपतिस्मा मूसा के द्वारा लाल समुद्र में हुआ । जब मूसा ने आत्मा में गाया तो हर एक आत्मा में चिल्लाया ,मरियम के साथ डफली बजायी और समुद्र किनारे कूदा । उन्होंने , हर एक ने उसी आत्मिक चट्टान से पीया । उन्होंने , हर एक ने प्रत्येक रात्रि ताजा मन्ना खाया । उनमे से हर एक ने यह किया ! परन्तु वहाँ दो ही जमीन मे प्रवेश करने पाये , दस लाख में से एक ।

55. क्या परीक्षा थी ? उन सभी ने एक ही चट्टान से पिया , एक ही आत्मिक मन्ना खाया जैसे कि हम इस प्रातः खा रहे हैं , परन्तु वचन की परीक्षा ने उनको प्रमाणित कर दिया था । जब कादेश बर्निया का समय आया , जब वे प्रतिज्ञा किये हुये देश में जाने के लिये तैयार हुये, और वे वहाँ तब तक ना जा सके जब तक कि उनकी वचन से परीक्षा न हो गयी । और सभी दसों व्यक्ति वापस आये और कहा , " हम नहीं कर सकते हैं ।" लोग .... की तरह हैं । हम तो उनके सामने टिड्डियों के सामान लगते हैं , उनके नगर की वड़ी–बड़ी दीवारें हैं । विरोधी दल बहुत अधिक बड़ा है ।"

56. परन्तु यहोशू और कालेब ने लोगों को शान्त किया । उन्होंने कहा , " हम इसे लेने से भी अधिक सामर्थी हैं । " क्यों ? इससे पहले कि वह प्रतिज्ञा किये हुये देश की तरफ निकलते , परमेश्वर ने बोला, " मैने वह देश तुम्हें दे दिया है । यह तुम्हारा है ।" परन्तु वहाँ हर एक

दस लाख में से एक ही था ।

57. आज संसार में लगभग पचास करोड़ तथाकथित मसीही लोग हैं , और हर एक दिन एक पीढ़ी का अन्त होता है । और अब क्या हो यदि आज स्वर्ग पर उठाया जाना हो जाये , और पाँच सौ लोग संसार में से स्वर्ग पर उठा लिये जायें ? आप उनके बारे मे कभी भी जान नहीं पायेंगे या अखबार में पढ़ पायेंगे कि वे चले गये । और परमेश्वर का आगमन गुप्त रूप से होगा । वो आयेगा और चुरा ले जायेगा । वे इतनी कम संख्या में होंगे , जब तक कि ....

58. ठीक वैसे तब उन दिनों में हुआ था जब चेलों ने यीशु से पूछा था , " शास्त्री फिर क्यों कहते हैं कि –कि एल्यियाह पहले आयेगा?" उसने कहा , " वह तो आ चुका और तुमने उसको न जाना "

59. क्या आपने कभी सोचा कि लोगों ने क्या किया था ? वे इस विश्वास में निरन्तर बने रहे थे कि एल्यियाह आने वाला है । और वो ठीक उनके मध्य में था और वे उसके बारे में जानते तक नहीं थे ।

60. अतः ऐसा ही मनुष्य के पुत्र के आगमन पर होगा । वे उसके साथ ठीक वैसा ही करेंगे । परमेश्वर का आत्मा यहाँ पर है । अच्छा , हम उसके साथ क्या करने जा रहे हैं ? क्या हम मन्ना खोयेंगे और वह सब कुछ करेंगे और लगातार ऊपर नहीं बढ़ेंगे ?

61. क्या आपने कभी एक बीज की तरफ ध्यान दिया , जैसे कि आदरणीय पिट्स ने कुछ क्षणों पहले कहा था , और कैसे वह बीज जमीन में चला जाता है ? बहुत सारे बीज जमीन में होते हैं । जब परमेश्वर उस प्रकाश के साथ जल के ऊपर मंडराया , और प्रकाश ने बाहर निकाला । परमेश्वर की पहली उपस्थिति जो कि बोला गया प्रकाश था , परमेश्वर के वचन से आया । परमेश्वर का वचन ही एक ऐसी चीज है जो अभी भी प्रकाश को लेकर आता है । और जब

जल वापस चला गया , पृथ्वी में पहले से ही बीज थे , और प्रकाश केवल उन बीजों को ऊपर लेकर आया जिनमे जीवन का अंकुर था , वे ही बाहर आये । परमेश्वर अपनी सृष्टि कर रहा था ।

62. और अब , ईस्टर की सुबह एक और प्रकाश पृथ्वी से आकर टकराया , जब पवित्र आत्मा दिया गया । और वह इसलिये दिया गया कि परमेश्वर के उन बीजों को प्रकाश दे , जिनको कि परमेश्वर अपने पूर्वज्ञान के द्वारा जानता था कि वे इस पृथ्वी पर होंगे। और वह उस पहले प्राकृतिक बीज को जानता था , वह जानता है कि आत्मिक बीज कहाँ पर हैं । जब परमेश्वर पहले पृथ्वी को आस्तित्व में लेकर आया तो आपका शरीर तब ठीक यहाँ पृथ्वी पर पड़ा हुआ था । हम इस पृथ्वी के भाग हैं । हम वहाँ पड़े हुये थे । और अपने पूर्वज्ञान के द्वारा वह ठीक–ठीक जानता था कि कौन उससे प्रेम करेगा और कौन उसकी सेवा करेगा , और कौन नहीं करेगा । उसका पूर्वज्ञान उसे यह बताता है । यदि ऐसा नहीं है तो वह परमेश्वर नहीं हो सकता है । असीमित हुये बिना वह परमेश्वर नहीं हो सकता है । यदि वह असीमित है तो वह सब बातों को जानता है ।

63. अतः आप लोगों को भारी गलतियाँ करते हुये देखते हैं । वे इसपर लड़खड़ा जाते हैं । वे जल्दबाजी करते हैं , और वे यह और वह सोचते हैं , परन्तु यह ठीक काम नहीं करता , हम इस बात को देखते हैं । परन्तु एक चीज है जो ठीक काम कर रही है ; वह यह है कि परमेश्वर की सिद्ध इच्छा जाने और उसमे खड़े रहें जिसके लिये परमेश्वर ने आपको बुलाया है ।

64. जैसा कि भाई जैक ने कुछ क्षणों पहले यहाँ नीचे परशियन स्कायर में उन सारी गड़बड़ियों के विषय में बोला । एक इस तरफ चल रहा होता है और एक उस तरफ चल रहा होता है ; और धर्मशास्त्र के ज्ञानियों और ऐसे ही लोगों के विषय में बताया , कि यदि आप कुछ धर्मशास्त्र का ज्ञान जानना चाहते हैं तो वहाँ नीचे जायें ।

65. मेरा अनुमान है कि ठीक ऐसा ही हाइड पार्क लंदन में है । मैं वहाँ पर गया था और वहाँ पर हर एक का अपना ही विचार है । बाबुल रूपी संसार में यह आधुनिक दिन की बातों का ढेर लगना है ।

66. परन्तु क्या आपने ध्यान दिया जब भाई पिट्स अपना प्यारा संदेश इस प्रातः हम लोगों को दे रहे थे ? जैसे ही उसने पार्क में बाहर जाना आरंभ किया , उसने एक छोटा ईस्टर लिली का फूल पाया । "उन सारी गड़बड़ियो के बीच में " , जैसा उन्होंने हमे बताया , " 'हाँ' या 'ना' कहने का उसके पास कोई तरीका नहीं था । उन सारी गड़बड़ियों के बीच में परमेश्वर का जीवन उसमे चमक रहा था ।" वह अपनी चमक के साथ वहाँ पर था , क्योंकि परमेश्वर ने ही उसे वहाँ होने के लिये ठहराया था । उन सारी गड़बड़ियों के बीच में कोई उसकी तरफ ध्यान नहीं दे रहा था ।उन्होंने उसकी आत्मिक उपयोगिता को नहीं देखा था।

67. और ऐसा ही आज हमारे बीच में हैं , हमारे इस बढ़े रूप में एकत्र होने में , कलीसियाओं में और नामधारी गिरजों में और ऐसी ही बातों में हैं । एक इस तरफ से खींचता है ,"हम को बैपटिस्ट या प्रेसबेटेरियन या यह या वह या कुछ और होना चाहिये ।" इन सभी के बीच में एक बढ़ता हुआ फूल है । परमेश्वर की सामर्थ ठीक हमारे मध्य में खड़ी हो रही है । आइये हम बस रूकें और इस सप्ताह कुछ मिनटों के लिये उसे देखें , और उसे ठीक अपने सामने प्रगट होते हुये देखें । हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर इसे करेगा । क्या आप विश्वास करते हैं? (सभा कहती है ' आमीन' – सम्पा.)

68. मैं देख रहा हूँ कि अभी हमें सीढ़ियों से नीचे होना चाहिये था। अतः आईये , हम में से हर एक प्रार्थना करे ।

69. प्रिय परमेश्वर , जब हम अपने सरों को आपकी उपस्थिति में झुकाते हैं , हम यह महसूस करते हैं कि हम यह माँगने के लिये अपर्याप्त हैं । परन्तु आपने हमसे प्रतिज्ञा की है कि यदि हम आयेंगे तो

आप हमे अस्वीकार नहीं करेंगे । और यह कठोर कथन जिनको कि अभी बोला गया है , किसी रीति से यह शिक्षा–सिद्धान्त नहीं हैं । 'दस लाख में एक ' परन्तु बस एक तरह से याद करने के लिये ।
क्योंकि आप ने कहा :
–...क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो कि जीवन को पहुँचाता है , और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं । बुलाये हुये तो बहुत परन्तु चुने हुये थोड़े से हैं ।

70. हे अनन्त पिता , इस आनेवाले सप्ताह की सभा के द्वारा सुसमाचार का उजियाला इस शहर के आरपार भेज दीजिये। किसी भी तरह से आपके महान , दूरदर्शी ज्ञान के द्वारा , यदि कोई बीज है , जैसे कि इस बात को नर और मादा के शुक्राणुओं में दिखाने की कोशिश की गयी ,होने पाये कि वे इस सभा में आने पायें । होने पाये कि पवित्र आत्मा उनको प्रकाश दे । हम यह अनुभव करते हैं कि शायद जितना कि हम सोचते हैं , उससे भी पहले समय हो जाये । हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि जैसे ही हम यहाँ आते हैं , बस इस बात का विश्वास करते हुये कि शायद यहाँ कुछ ऐसी बात है जिसको कि किया जा सकता है ताकि लोगों की सहायता की जा सके या–या उस आखिरी भेड़ को पकड़ा जाये । हम जानते हैं कि जब भेडशाला भर जायेगी तब चरवाहा दरवाजे को बन्द कर देगा ।

71. जैसा कि नूह के दिनों में हुआ था , जब परिवार का अंतिम सदस्य अन्दर लाया गया , परमेश्वर ने दरवाजा बन्द कर दिया । और उन्होंने खटखटाया और प्रहार किया , परन्तु बहुत देर हो चुकी थी । प्रिय परमेश्वर , उनके पास एक मौका था ।
आपने कहा , " भेढ़शाला का द्वार मैं हूँ ।"

72. कवि के द्वारा लिखा हुआ गाना कितना प्रभावशाली है , " क्या निन्यानवे तेरे लिये काफी नहीं ? परन्तु नहीं , वहाँ पर एक और थी ।" हो सकता है कि वह एक काली वाली भेढ़ हो , या हो सकता है कि

वह एक तुच्छ भेढ़ हो , हो सकता है कि पुरूष हो या स्त्री हो । हम नहीं जानते हैं कि वे कहाँ हैं , परन्तु उस अंतिम को अवश्य ही आना है और फिर दरवाजा बन्द कर दिया जायेगा । ओह मेरे परमेश्वर , आप जो कि सब बातों को जानते हैं , इस प्रातः हमारे जीवनो को जाँचिये। और जहाँ कहीं भी हम जा सकते हैं , वहाँ हमें भेजिये , ताकि हम उस अंतिम जन को ढूढ़ें , कि दरवाजा बन्द कर दिया जाये और चरवाहा भेड़ों के साथ अन्दर हो । परमेश्वर , इसे प्रदान कीजिये । यदि यहाँ पर वही एक है , यदि उसी को अन्दर आना है.....

73. " जितनों को पिता ने मुझे दिया है , सब मेरे पास आयेंगे । और कोई भी जन तब तक नहीं आ सकता है जब तक की स्वर्गीय पिता ही नहीं खींच लाये "

74. और यदि कोई खिंचाव है या एक छोटा सा अनुभव है , कि हो सकता है कि किसी व्यक्ति के लिये यहाँ या साढ़ियों के नीचे या जहाँ कहीं भी वह हो , वह घड़ी हो ,होने पाये कि वे उत्तर दें , "परमेश्वर, हाँ मैं ही वह छोटा जन हूँ जो दूर भटक गया हूँ , और जिसने सम्पूर्ण जीवन भर इससे युद्ध करा । मैंने–मैंने–मैंने अनुभव किया कि मुझे आना चाहिये ,परन्तु आज मैं असफलता की तरफ लटका हुआ हूँ । मैं ऊपर या नीचे नहीं जा सकता हूँ । मैं कहीं भी नहीं जा सकता हूँ । " और होने पाये कि वह महान चरवाहा आये , अपने कोमल हाथों को नीचे लाकर उस जन को सुरक्षित अन्दर ले ले , उसे अपने कंधे पर रखकर सुरक्षित वापस अन्दर ले आये ।

75. परमेश्वर , हो सकता है कि यहाँ कोई ऐसा है जो कि बिमार है , उस जैसी अवस्था में है कि चिकित्सक ने कहा है , " अब कुछ नहीं किया जा सकता है । "उसने उसे बचाने कि बहुत कोशिश की परन्तु उसे बचा नहीं पाया । यह उसकी पहुँच से बाहर है । कुछ भी ऐसा नहीं जो कि वह कर सकता है । उसकी दवा और उसका चाकू वहाँ पहुँच नहीं सकता है । परन्तु हे परमेश्वर , आपके महान हाथों से दूर

कुछ भी नहीं , और आपका वचन ही आपका हाथ है । अतः हम प्रार्थना करते हैं प्रिय परमेश्वर कि इस प्रातः जबकि हम आपसे बातचीत करते हैं , आप नीचे आयेंगे और उस व्यक्ति को उठायेंगे जो बिमार है और अपनी सहायता नहीं कर सकता है , वह सारे वैज्ञानिक बातों की पहुँच से दूर है , चिकित्सकों की पहुँच से दूर है ; होने पाये कि वह चंगाई प्राप्त करे । परमेश्वर , इसे प्रदान कीजिये ।

76. जैसा कि हम दाऊद के विषय में सोचते हैं कि उसको कुछ भेड़ों के ऊपर निगरानी करने के लिये ठहराया गया था , बस कुछ ही भेड़ों के ऊपर । परन्तु एक दिन एक भालू अन्दर आता है और उस छोटी भेड़ को ले लेता है और उसे बाहर ले जाता है और उसने उसे खा लिया होता (जैसे कि कैन्सर शरीर को खा लेता है) या एक बढ़ा शेर था। परन्तु दाऊद राईफल से अच्छी तरह से लैस नहीं था ,या कोई तलवार चलाने वाला व्यक्ति नहीं था , परन्तु केवल एक गोफन के साथ भेड़ के पीछे जाता है । और जब उसने यह पाया कि पशु उस छोटी भेड़ को बस मारने पर था ,उसने उसे एक गोफन से मार डाला । बस एक छोटा सा शस्त्र जिसमे चमड़ा और एक रस्सी लगी होती है , परन्तु उसको उस गोफन पर विश्वास था ।

77. परमेश्वर , हमारे मध्य मे कोई बढ़ा ज्ञानी नहीं है । हम साधारण लोग हैं जिनके पास साधारण सी प्रार्थना है ; परन्तु इस प्रातः हम पिता की भेड़ों के पीछे आ रहे हैं । वह स्त्री जिसने सड़कों पर अभद्र तरीके से सिगरेट पी है , वह सिगरेट से शान्ति पाने की कोशिश कर रही है; वो मनुष्य जिसने कि ग्लास को सूंघा है और उसे पीछे रोकने की कोशिश करता है पर दुश्मन उसे मजबूती से पकड़े रहता है , वो लड़का या वो लड़की जिन्होंने सही बात करने की कोशिश की , वे इतनी सामर्थ नहीं जुटा पा रहे कि उस गलत बात को छोड़ दें ; हम इस प्रातः यीशु मसीह के नाम में आते हैं , और का दावा करते हैं । हम दुश्मन को चुनौती देंते हैं ; क्योंकि यह गोफन अर्थात यह प्रार्थना , एक साधारण सी बात है , परन्तु हम पिता की भेड़शाला में उस एक व्यक्ति को वापस

लाने के लिये आते हैं , कि हम उन बातों का लेखा–जोखा दे सकें जिन्हें हमारे हाथों में सौंपा गया है। होने पाये कि परमेश्वर की सामर्थ लोंगो के हृदयों में नीचे तक जाकर विश्वास को टकराये , और होने पाये कि भटका हुआ प्राण इस प्रातः वापस आ जाये । होने पाये कि इस जीवन के प्रलोभन उन्हें छोड़ दें , उन्हें छोड़ कर चले जायें । और होने पाये कि वह अपने आप को सुरक्षित स्वामी के कंधे पर पाये , कि उसको सुरक्षित वापस लाया जाये। हम इसे यीशु के नाम में माँगते हैं , आमीन।

78. परमेश्वर आप सभी को आशीष दे । जब तक कि कल मैं फिर से आप को न देखूं , मैं इस सभा को भाई शेखेरियन को सौंपता हूँ । (टेप में रिक्त स्थान – सम्पा.)

(भाई ब्रन्हम तीसरे रेडियो प्रसारण को समाप्त करते हैं)

79. मैं–मैं यह आशा करता हूँ कि आप ..... कि मैंने आपकी व परमेश्वर की दृष्टि में बहुत अनुग्रह पाया है , कि मैं इस अनुग्रह में इस बात का विश्वास करूं कि मैं यहाँ पर खड़ा होकर आपको कुछ ऐसी बात बताऊँगा जो कि गलत है । मैंने किसी दूसरे दिन अपना छप्पनवाँ जन्मदिन पार किया । यह बस एक बूढ़े व्यक्ति का संदेश नहीं है । मैं इस बात पर तब से विश्वास करता हूँ जब मैं एक छोटा लड़का था । और यदि यह सत्य नहीं है तो इस पृथ्वी पर मैं परमेश्वर के लिये सबसे मूर्ख व्यक्ति होऊँगा । मैं इस बात के लिये अपना सम्पूर्ण जीवन दे सकता हूँ । और होने पाये कि मैं इस बात को सत्यनिष्ठा से बोलूं ; यदि मेरे पास दस हजार जीवन भी होते , तौभी मैं अपना विचार नहीं बदलूंगा।

80. अब चंगाई हर एक व्यक्ति की पहुँच में होती है । स्मरण रखिये, चंगाई आप में है । जब परमेश्वर ने नाशपाती के पेड़ को अदन की वाटिका में लगाया , तो परमेश्वर ने नाशपाती के पेड़ में उस हर एक

नाशपाती को रखा जो कि उसमे कभी उगेगी । देखिये , आप बस ..... नाशपाती के पेड़ को या सेब के पेड़ को या फल के पेड़ को बस पृथ्वी में से जल लेकर बढ़ना है । अब आप में से हर एक में वो क्षमता है कि आपको छुड़ा सके , कयोंकि यह तो परमेश्वर है , जबकि आप बपतिस्में के द्वारा (जल के बपतिस्में के द्वारा नहीं) मसीह में लगाये जा चुके हैं , यह आत्मिक बपतिस्मा है । आप मसीह में जल के बपतिस्में के द्वारा नहीं आते हैं । आत्मिक बपतिस्में के द्वारा आते हैं !

81. कल दोपहर , यदि परमेश्वर ने चाहा तो मैं उस विषय पर बोलूंगा कि वह बात कैसे होती है और उस बात का वास्तविक उपयोग क्या है। यह दोपहर में होगा अतः यह आपकी किसी भी सभा में हस्तक्षेप नहीं करेगा ।

82. अब देखिये , आप में से हर एक यहाँ विश्वासीयों की तरह खड़े हुये हैं , तब वह जीवन जो मसीह में था , आपके अन्दर है । यदि आप इसे देख सकते हैं तो यह हो सकता है !

83. यह शैतान का काम है कि आप को इस बात से रोके रखे , आप को अंधा करे रहे । वह आपको अंधा रहने देगा ,समझे , आप तब नहीं जानते हैं कि आप कहाँ जा रहे हैं । एक व्यक्ति जो कि अंधा है यह नहीं बता सकता है कि वह कहाँ जा रहा है ; उसे उस व्यकित से समझ प्राप्त करनी चाहिये जो कि देख सकता है । जब तक कि हम समझ नहीं जाते , किसी को हमे बताना है कि सच्चाई कया है ।

84. और मसीह आप के लिये मरा , और आपको संसार से हटाकर मसीह में लगाया गया । और हर एक चीज जिसको की आपको आवश्यकता है, वो ठीक आप में पवित्र आत्मा के बपतिस्में के द्वारा मौजूद है । क्या यह ठीक बात नहीं है ? अब केवल एक ही बात आप को करनी है और वह यह है कि उसमें से पीना शुरू करें ।

85. और जैसे–जैसे पेड़ पीता जाता है , वह प्रत्येक वर्ष पत्तियाँ , कल्ले और फल बाहर धकेलता जाता है । फल जमीन में नहीं होते हैं, फल पौधे में होते हैं । कितनो को यह समझ में आ गया , 'आमीन' कहिये। (सभा 'आमीन' कहती है – सम्पा.) अतः आप देखिये कि फल पौधे में होते हैं , और एक पौधे को सोते में से पीना चाहिये । जैसे वर्षा नीचे आती है कि वह उसमे से पीये और जैसे–जैसे वह पीता जाता है, वह बढ़ता जाता है ।

86. और वह बढ़ रहा है जब तक की वह एक पूरे कल्ले तक नहीं आ जाता , ठीक कलीसिया के जैसे जिसको कि इस युग में खिलना था ।

87. और जैसे–जैसे हम पीतें हैं , हम बढ़ते जाते हैं । परन्तु यदि एक पौधा पीने से इन्कार कर दे तब वह पौधा बढ़ नहीं सकता है । और यदि आप व्यक्तिगत रूप से इसका विश्वास करेंगे !

88. क्योंकि आप जानते हैं कि कैसे परमेश्वर सभा में विभिन्न बातों को दिखाता है , कि आप ने क्या किया है और आपको क्या करना चाहिये था और ऐसी ही विभिन्न बातें । जबकि हम खड़े हुये थे , हम यह आशा कर रहे थे कि पवित्र आत्मा इस प्रातः हम पर उतरेगा। परन्तु मैं इन्तजार करता रहा ।

89. मैं सोचता हूँ कि यह बात हमको अधीर कर देती है कि नीचे वे हमसे चाह रहे हैं कि हम यहाँ से बाहर आ जायें , समझे । परन्तु उन्हें हमारी आवश्यकता है ; हमे अभी देर हो चुकी है ।

90. परन्तु इस पर अपने पूर्ण हृदय के साथ विश्वास रखें । कृप्या ऐसा करें । यदि मैंने ..... यदि मैंने आपकी दृष्टि में एक सच्चे व्यकित की तरह अनुग्रह पाया है , तो इस बात पर विश्वास कीजिये । अब

अपने हाथ एक दूसरे पर रखें ।

91. अब देखिये , बाईबिल यह नहीं कहती है , " यह चिन्ह विलियम ब्रन्हम के होंगे ।" यह नहीं कहा , " यह केवल ओरल रौबर्ट्स के होंगे।" यह नहीं कहा ," यह चिन्ह भाई कौप्स के होंगे ।" या किसी और के होंगे।

92. "वे" , बहुवचन , "जो विश्वास करते हैं , उनमें यह चिन्ह पाये जायेंगे । यदि वे बिमारों पर हाथ रखेंगे तो वे चंगे हो जायेंगे ।" यह परमेश्वर की वह सामर्थ है जो कि आप में है , जो कि उस व्यक्ति को जीवन देती है जिसपर आपने हाथ रखा है , पवित्र आत्मा ही जीवन को देनेवाला स्त्रोत है ।

93. प्रिय परमेश्वर , यीशु मसीह के नाम में इस निर्णायक घड़ी में जब कलीसिया .....होने पाये कि वे इस क्षण बिना किसी अधीरता के खड़े हो जायें , और होने पाये कि वही सामर्थ जिसने मसीह को कब्र में से जिलाया , सुसमाचार की सच्चाई तक उन्हें जिला दे ,कि यीशु ने जो कार्याधिकार दिया था कि यदि वे " बिमारों पर हाथ रखेंगे तो वे चंगे हो जायेंगे ।" होने पाये कि हर एक शैतानी शक्ति , हर एक रोग, हर एक परेशानी , हर एक ऐसी बात जो लोगों में होकर उन्हें सताती है , विश्वास के द्वारा अभी उन्हें छोड़कर चली जाये । विश्वास करनेवाले लोगों के जैसे हम यह यीशु मसीह के नाम में माँगते हैं । आमीन ।

94. यदि आप यह विश्वास करते हैं कि वही इसे करता है तो अब अपने हाथों को उठाईये और उसकी स्तुति कीजिये ।

95. प्रिय परमेश्वर , जब तक की इस बात को किया न जाये , इस बच्चे की मृत्यु हो हो जायेगी । मैं इस बंधन को यीशु मसीह के नाम से डाँटता हूँ । होने पाये कि यह इस निर्दोष बच्चे को छोड़कर चला जाये। आमीन । अब चिकित्सकों ने कोशिश की और वे असफल हो गये । केवल विश्वास कीजिये ।

ONE IN A MILLION

दस लाख में एक

भाई ब्रन्हम के द्वारा यह संदेश 24 अप्रैल , 1965 को , शनिवार प्रातः फुल गास्पल व्यापारियों के नाश्ते पर , किल्फटन कैफेटेरिया लॉस एन्जल्स कैलिफोर्निया , सयुक्त राज्य अमेरिका में दिया गया । चुम्बकीय टेप रिकार्डिंग से छपे हुये पन्ने पर ठीक–ठीक मौखिक संदेश को लाने के लिये हर एक प्रयास किये गये हैं , और बिना किसी कॉंट–छॉंट किये हुये यह संदेश छापा गया है और VOICE OF GOD RECORDINGS के द्वारा बाँटा जाता है ।

Published 2003.

© 2001 VGR, ALL RIGHTS RESERVED

VOICE OF GOD RECORDINGS
P.O.BOX 950 , JEFFERSONVILLE , INDIANA 47131 U.S.A.

VOICE OF GOD RECORDINGS INC.

India Office

No. 28, Shenoy Road, Nungambakkam, Chennai - 600 034. South India.

Phone : 044-28274560 Fax : 044-28256970

कोपी राईट सूचना

सारे अधिकार सुरक्षित है। यह पुस्तक व्यक्तिगत प्रयोग या मुफ्त में देने और एक औजार के समान यीशु मसीह का सुसमाचार फैलाने के लिये
घर के प्रिंटर पर छाप सकते हैं।

इस पुस्तक को बेचना, अधिक मात्रा में फिर से छापना, वेब साईट पर डालना, दुबारा छापने के लिये सुरक्षित रखना, दूसरी भाषाओं में अनुवाद करना या धन प्राप्ति के लिये निवेदन करना निषेध है। जब तक की वायस ऑफ गोड रिकार्डिंग कि लिखित अनुमति प्राप्त ना कर ली जाये।

अधिक जानकारी या दूसरी उपलब्ध सामग्री के लिये कृपया संपर्क करें:

वायस ऑफ गोड रिकार्डिंग्स

पोस्ट बोक्स 950 जैफरसन विले, इन्डियाना 47131 यू. एस. ए.

www.branham.org